संगीत की मधुर इबारत लिखता भातखंडे

प्रख्यात संगीतकार विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा 1926 में मैरिस कालेज ऑफ म्यूजिक के नाम से स्थापित संगीत विद्यालय एक सदी में वक्त के साज पर मनोहारी स्वर लहरियां उत्पन्न करता नजर आ रहा है। यह न केवल भारत का प्रमुख संगीत संस्थान बन चुका है, बल्कि उत्तर प्रदेश के पहले राज्य विश्वविद्यालय का दर्जा भी हासिल कर चुका है। भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय में दुनिया के कई देशों से विद्यार्थी संगीत और नृत्य की शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं।

-शबाहत हुसैन विजेता
लखनऊ

एक सदी का सफर

1926 से 1966 तक मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक के नाम से पहचान रखने वाला संस्थान 1966 में अपने जनक विष्णु नारायण भातखंडे के नाम पर भातखंडे कॉलेज ऑफ हिन्दुस्तानी म्यूजिक में बदल गया। वर्ष 2000 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से इसे डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा मिला और तत्कालीन प्रधानाचार्य डॉ. पूर्णिमा पांडेय को कुलपति बनाया गया। 2022 तक यह डीम्ड विश्वविद्यालय रहा। इस दौरान पं. विद्याधर व्यास, श्रुति सडोलीकर को यहां का कुलपति बनाया गया। कुछ समय तक यहां कार्यवाहक कुलपति भी रहे, लेकिन 2022 में राज्य विश्वविद्यालय बन जाने के बाद भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय में प्रो. मांडवी सिंह पहली कुलपति बनीं।

मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक नाम के पीछे की कहानी

संगीत के अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के इस संस्थान को विष्णु नारायण भातखंडे ने शुरू किया, लेकिन इसका उद्घाटन संयुक्त प्रांत के तत्कालीन गवर्नर सर विलियम सिंक्लेयर मैरिस ने किया और कालेज का नाम भी उन्हीं के नाम पर कर दिया गया। आजादी के 19 साल बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने इसका अधिग्रहण किया और इसका नाम इसके संस्थापक के नाम पर किया गया।

सुनहरी हैं उम्मीदें

इस साल हुए दीक्षांत समारोह में राज्यपाल आनंदी बेन पटेल से 8 स्वर्ण पदक लेकर अंशिका कटारिया जैसे विद्यार्थियों ने यह उम्मीद जाहिर कर दी है कि संगीत में आने वाला कल भी बहुत सुनहरा है। योग्य गुरुओं से सीखकर विद्यार्थी सफलता का आसमान चूमने को बेकरार हैं।

सुनहरा रहा है एक सदी का सफर

भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय ने संगीत की दुनिया को पार्श्व गायक तलत महमूद, गायक अनूप जलोटा, संगीतकार नौशाद, शास्त्रीय गायक पं. केजी गिंदे, श्रीलंकाई गायिका नंदा मालिनी, दीपिका प्रियदर्शिनी और कल्पना पटवारी जैसे कलाकार दिए। इस संस्थान में मलिका-ए-गजल पद्मभूषण बेगम अख्तर, अहमद जान थिरकवा, कथक नर्तक पुरु दाधीच, एस एन रतजनकर और मोहन राव कल्याणपुरकर जैसे नामचीन कलाकार शिक्षक के रूप में रहे। राज्य विश्वविद्यालय बन जाने के बाद तो पिछले तीन साल में यहां दुनियाभर के संगीत शिक्षक संगीत की शिक्षा देने के लिए आते रहे।

कौन थे पं. विष्णु नारायण भातखंडे

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर पहला आधुनिक ग्रंथ लिखने वाले पं. विष्णु नारायण भातखंडे ने रागों की व्याख्या सहज भाषा में की। रागों के व्याकरण की व्याख्या करने वाली कई बंदिशों की रचना की। संगीत प्रेमियों को यह जानकार झटका लग सकता है कि संगीत में अपना अमूल्य योगदान देने वाले भातखंडे जी के परिवार का संगीत से कोई जुड़ाव नहीं था। एलिफिस्टन कॉलेज मुंबई में, उन्होंने कानून की डिग्री ली थी। कुछ समय तक उन्होंने आपराधिक मुकदमे भी लड़े, क्योंकि पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने सितार की शिक्षा भी लेनी शुरू कर दी थी इसलिए उनकी संगीत में रूचि बढ़ गई, उन्होंने संगीत से जुड़े ग्रंथों का अध्ययन भी किया। उस्ताद अली हुसैन से ख्याल और ध्रुवपद की विधिवत शिक्षा ली। वर्ष 1900 में पत्नी और 1903 में बेटी के निधन के बाद उन्होंने वकालत पूरी तरह से छोड़ दी और संगीत में ही रम गए।

डीम्ड विश्वविद्यालय रहने के दौरान विवादों से रहा चोली दामन का साथ

वर्ष 2000 से 2022 के बीच जब यह विश्वविद्यालय डीम्ड यानी सम विश्वविद्यालय था तब यहां खूब विवाद पनपे और विश्वविद्यालय सियासत का गढ़ बना रहा। शिक्षकों ने कुलपतियों के खिलाफ मोर्चा खोला। शिक्षकों के वेतन के मामले में विवाद हुए। पेंशन मामले विश्वविद्यालय से शासन के बीच घूमते रहे। शिक्षकों ने कुलपतियों की शिकायतें राजभवन तक पहुंचाईं।

विश्वविद्यालय में होती है इन विषयों की पढ़ाई

अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय में कथक और भरतनाट्यम नृत्य के अलावा तबला, सितार, ढोलक, पखावज वादन की शिक्षा दी जाती है। विभिन्न विषयों में बीपीए (स्नातक), एमपीए (स्नातकोत्तर) की शिक्षा के साथ पीएचडी कराई जाती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य में दो वर्षीय डिप्लोमा, ध्रुवपद-धमार, ठुमरी-दादरा, सुगम संगीत, हारमोनियम और लोकनृत्य में दो वर्षीय डिप्लोमा, लोक संगीत और ढोलक में एक वर्षीय डिप्लोमा का कोर्स कराया जाता है। इस विश्वविद्यालय में ध्रुवपद-धमार, ठुमरी गायन, सुगम शास्त्रीय संगीत, संगीत रचना और निर्देशन में विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है।

आर्ट गैलरी

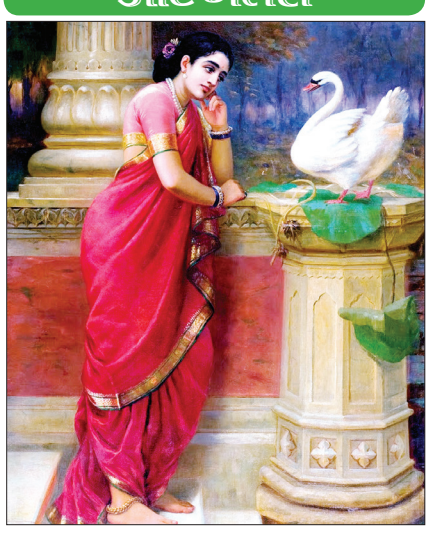

हंस दमयंती

राजा रवि वर्मा की एक प्रसिद्ध पेंटिंग है 'हंस दमयंती'। यह सरल, परिष्कृत, सुंदर और देखने में सुखद है। इसमें थोड़ा-सा नाटकीयपन भी है। दमयंती ने सुंदर भावों के साथ अपनी मुद्रा बनाई है। उनकी भाव-भंगिमाएं आकर्षक हैं और ऐसा लगता है जैसे वह रेलिंग पर बैठे हंस की बात ध्यान से सुन रही हैं। इस पेंटिंग में नीले, गुलाबी और सुनहरे रंगों का एक सौम्य मिश्रण है। ये सभी मिलकर पेंटिंग और दृश्य को एक स्वप्न जैसा प्रभाव देते हैं।

राजा रवि वर्मा देश के सबसे प्रसिद्ध चित्रकारों में से एक हैं। उन्हें 'आधुनिक भारतीय कला का जनक' भी कहा जाता है। उनकी पेंटिंग की खासियत पौराणिकता और ऐतिहासिक दृश्यों में है। उन्होंने अपने पात्रों, खासकर महिलाओं को रंगों, गति और शैली के माध्यम से चित्रों में जीवंत कर दिया। उनका जन्म 29 अप्रैल 1848 को केरल के किलीमनूर महल में हुआ था।

रवि वर्मा ने अपनी कला में भारतीय विषयों को यूरोपीय यथार्थवादी शैली (Realistic Style) के साथ मिश्रित किया, जो उस समय में एक क्रांतिकारी कदम था। उन्होंने हिंदू देवी-देवताओं और पौराणिक कथाओं (महाभारत, रामायण) के पात्रों को मानवीय रूप में चित्रित किया, जिससे ये छवियां आम लोगों के बीच व्यापक रूप से लोकप्रिय हो गईं। आज भी हिंदू देवी-देवताओं की जो तस्वीरें कैलेंडर और घरों में दिखाई देती हैं, उनमें से कई राजा रवि वर्मा की पेंटिंग्स से प्रेरित हैं।

उनकी एक बड़ी उपलब्धि लिथोग्राफिक प्रिंटिंग प्रेस के माध्यम से अपनी कलाकृतियों को जनसाधारण तक पहुंचाना था। इससे पहले कला केवल राजघरानों तक ही सीमित थी।
उनकी प्रमुख कृतियों में 'शकुंतला', 'द महाराष्ट्रियन लेडी', 'हरिश्चंद्र इन डिस्ट्रेस' और 'जटायु वध' शामिल हैं। 1873 में उन्होंने अपनी पेंटिंग 'नायर लेडी एडोर्निंग हर हेयर' के लिए वियना में गवर्नर का स्वर्ण पदक जीता। 2 अक्टूबर 1906 को उनका निधन हो गया। भारतीय कला में उनका योगदान अमूल्य है।

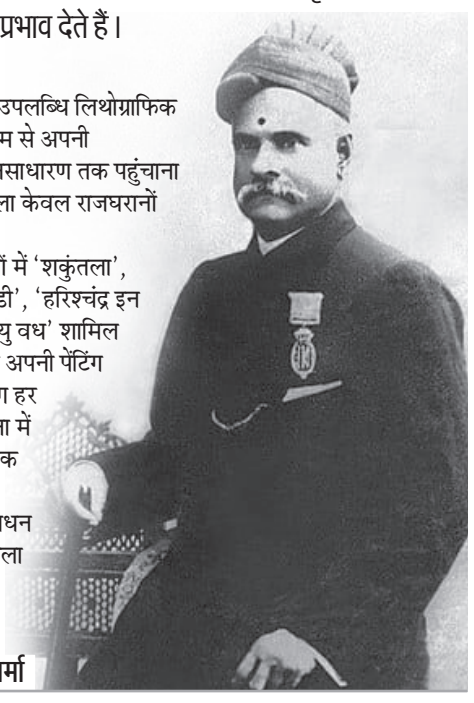
पेंटर राजा रवि वर्मा

रंग-तरंग

उत्तराखंड राज्य गठन की 25 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में देहरादून इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ डिजाइन में 'उद्गम 2025' प्रदर्शनी का आयोजन हुआ, जिसमें प्रथम सेमेस्टर के छात्रों की रचनात्मकता और नवाचार को दर्शाया गया। कुलपति प्रो. रघुरामा जी ने इसका शुभारंभ किया। प्रदर्शनी में सामाजिक सरोकार, भारतीय इतिहास और पारंपरिक शिल्पकला पर आधारित कार्यशालाओं और प्रोजेक्ट्स का प्रदर्शन किया।

कला, शिल्प, इतिहास और डिजाइन प्रेरित करते रचनात्मकता को

प्रदर्शनी में महिला सुरक्षा टूलकिट और भूख जागरूकता जैसे विषय विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे, जहां विद्यार्थियों ने समुदाय कल्याण और सहानुभूति को बढ़ावा देने वाले डिजाइन समाधान और हस्तनिर्मित कलाकृतियां प्रस्तुत कीं। विद्यार्थियों ने पारंपरिक कथा-कला जैसे उत्तराखंड की ऐपन कला, राजस्थान की कावड़ कला और बिहार की वारली कला का भी अध्ययन किया और उन्हें आधुनिक डिजाइन शिक्षा के साथ जोड़कर नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। प्रदर्शनी इस बात का उदाहरण रही कि कला, शिल्प, इतिहास और डिजाइन किस प्रकार मिलकर रचनात्मकता को प्रेरित करते हैं, संस्कृति का संरक्षण करते हैं और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त बनाते हैं। 'उद्गम' कला, इतिहास और डिजाइन के माध्यम से सामाजिक चेतना जगाने का एक प्रेरणादायक उत्सव था। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे, जिन्होंने विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की सराहना की और अपने व्यावसायिक अनुभवों से प्रेरणादायक विचार साझा किए। प्रदर्शनी में डॉ. उमाकांत पंवार, पूर्व आईएएस अधिकारी, प्रमुख सचिव (उत्तराखंड सरकार), ग्रुप एडवाइजर एम्पायर एनर्जी, उद्यमी, एंजेल निवेशक एवं विज्ञान, डिजाइन व वास्तुकला के उत्साही के लोग शामिल हुए।